तम्बाकू–भारत में आगमन

नरेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (EXTENSION)

राजकीय महिला महाविद्यालय गोहाना

सारांशः–

तम्बाकू पौधों की पत्तियों से प्राप्त होता है। यह एक मादक और उत्तेजक पदार्ध है। तम्बाकू (धुम्रपान) एक ऐसा अभ्यास है जिसमें तम्बाकू को जलाया जाता है और उसका धुआं या तो चखा जाता है या फिर सांस से खींचा जाता है। तम्बाकू के सेवन का सबसे आम तरीका धूम्रपान है। धम्रपान करने वाले इसे किशोरावस्था में या अधिकतर व्यक्ति आरम्भिक युवावस्था में आरम्भ करते है। भारत में तम्बाकू पुर्तगालियों द्वारा मुगलकाल में लाया गया। भारत में मुगल बादशाहों में सर्वप्रथम अकबर ने तम्बाकू का सेवन किया था।

तम्बाकूः–

तम्बाकू रोपित फसल है। पौधे को पौधशाला में तैयार किया जाता है। पौधशाला की भूमि का चुनाव करते समय यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि स्थान ऊंचाई पर हो पानी का विकास अच्छा हो तथा सिंचाई का साधन निकट हो। आवश्यकतानुसार उस बीज को लेकर बालू या राख में मिलाकर बौने के बाद हथेली से पीओ देना चाहिए तथा पानी देते रहना चाहिए। एक एकड़ पौधशाला के लिए दो से तीन सेर बीज पर्याप्त होता है जब पौधा 4.–6 इंच बड़ा हो जाता है तो उसको अच्छी तरह तैयार किए हुए खेतों में लगा देते है। तम्बाकू पौधों की पतियों से प्राप्त होता है। पके हुए पेड़ों को जड़ से काटकर या पकी पत्तियों को तोड़कर सिझाते है। सिझानें के तरीको में विशेष अंतर है। सिचाई उस क्रिया का नाम है, जिसके द्वारा पत्तियों सुखाकर बेचने योग्य बनाई जाती है। सिझाई हुई तम्बाकू को ही खाने, पीने या सुघने के काम में लाते हैं। हुक्का, तम्बाकू का डंठल भी पीने के काम आता है।

तम्बाकू का आरम्भ (उत्पत्ति) :–

तम्बाकू की उत्पति कब और कहॉ हुई, इसका ठीक से तो कोई पता नहीं चलता। कहते है कि एक बार पुर्तगाल स्थित फ्रांसीसी राजदूत जॉन निकोट ने अपनी रानी के पास तम्बाकू का बीज भेजा ओर तभी से इस पौधे का प्रवेश प्राचीन संसार में हुआ। निकोट के नाम को अमर रखने के लिए तम्बाकू का वास्तविक नाम निकोशियाना रखा गया। तम्बाकू दक्षिणी अमेरिका का पौधा माना जाता है। इसकी खेती ऐतिहासिक काल से होती चली आ रही है। यद्यपि तम्बाकू अयनवृतीय पौधा है, तथापि इसकी सफल खेती अन्य स्थानों में भी होती है, क्योंकि यह अपने को विभिन्न प्रकार की भूमि तथा जलवायु के अनुकूल बना लेता है। अब तक संसार में तम्बाकू की 60 विभिन्न जातियॉ मिल चूकी है लेकिन खेती तथा व्यापार की दृष्टि से केवल दो जातियॉ निकोशियाना टबैकम और निकोशियाना रास्टिका प्रमुख हैं।

भारत में तम्बाकू का आगमनः–

भारत में अकबर बादशाह से पहले तम्बाकू के प्रयोग की कोई जानकारी इतिहास में दर्ज नहीं है। भारत में तम्बाकू सबसे पहले पुर्तगालियों द्वारा लाया गया। उस समय भारत में मुगल शासक अकबर का शासन था। पुर्तगालियों के द्वारा भारत में लाये गए तम्बाकू का सेवन सबसे पहले मुगल बादशाह अकबर के द्वारा किया गया। अकबर के दरबार में बर्नेल नामक पुर्तगाली आया, तो उसने अकबर को तम्बाकू और बहुत सुन्दर बड़ी सी जड़ाउ चिलम भेंट की। बादशाह को चिलम बहुत अच्छी लगी और उसने चिलम पीने की तालीम भी उसी पुर्तगाली से ली। अकबर को धुम्रपान करते हुए देखकर उसके दरबारियों को आश्चर्य हुआ और उनकी इच्छा भी चिलम में तम्बाकू पीकर धुंए को फेकने की हुई। इस प्रकार भारत में धुम्रपान (तम्बाकू) का आरम्भ हुआ। लेकिन कुछ विद्वानों के अनुसार तम्बाकू को सबसे पहले अकबर बादशाह का उच्च अधिकारी बीजापुर से लाया था। और उसे सौगात के तौर पर बादशाह को भेंट किया था। इसके बाद आम जनता ने भी तम्बाकू को चिलम में भरकर पीना शुरू किया।

हुक्के का आविष्कारः–

तम्बाकू के आने के बाद अकबर के शासन काल में अब्दुल नाम के कारीगर ने हुक्के का आविष्कार किया। उनका कहना था कि पानी के माध्यम से होने वाले धुम्रपान से सेहत को कोई नुकसान नहीं होता है। जबकि आधुनिक शौधों के अनुसार यह बात पूर्ण रूप से गलत साबित हुई है।

1605 ई० में अकबर की मृत्यु के बाद जहांगीर मुगल बादशाह बना। जहागीर के शासन काल में पुर्तगालियों ने भारत में तम्बाकू की खेती करनी आरम्भ कर दी थी। इस प्रकार भारत में तम्बाकू का अधिक प्रचलन हो गया था। आम जनता में तम्बाकू के बढ़ते प्रयोग और इसके दुष्प्रभाव के कारण मुगल बादशाह जहागीर ने तम्बाकू का प्रयोग करने वालों के लिए सजा निर्धारित की थी। उन्होंने घोषणा की थी, कि धुम्रपान (तम्बाकू) पीने वालों के होठों को काट दिया जाएगा तथा इसके तहत धुम्रपान करने वाले आदमी का मुंह काला करके गधे पर बैठाकर पूरे नगर में घुमाया जाएगा। परन्तु जहांगीर के प्रतिबंध के द्वारा भी भारत में पूर्ण रूप से तम्बाकू के सेवन को प्रतिबंधित नहीं किया जा सका था। इसका प्रयोग भारत में लगातार होता रहा।

आधुनिक भारत में भी तम्बाकू का सेवन कई रूपों में हो रहा था। भारत में प्रयोग किए जाने वाले तम्बाकू के प्रकार निम्नलिखित है।

1 धुंआरहित तम्बाकू :– तम्बाकू वाला पान, पान मसाला, मैनपुरी तम्बाकू, मावा सनस मिश्री, बज्जर गुढ़ाकू, चबाने योग्य तम्बाकू, क्रीमदार तम्बाकू पाउडर, तम्बाकू युक्त पानी।

2 धुम्रपान वाला तम्बाकूः– बीड़ी, सिगरेट, चैरस, धुमंटी, पाइप, हुकली, चिलम, हुक्का।

तम्बाकू के दुष्प्रभावः–

तम्बाकू को प्रयोग करने के कारण मुंह में अनेक रोग उत्पन्न हो जाते है। सफेद दाग, मुॅह का नहीं खुलपाना, कैंसर आदि रोग हो सकते है। इसके कारण ह्रदय की धमनियों में रक्त प्रभाव कम हो जाता है। रक्त चाप बढ़ सकता है सांस की बीमारी जैसे दमा, फेफड़ों का कैंसर आदि हो सकती है। इसका सेवन किशोरावस्था में ज्यादातर व्यक्ति शुरू करते है। बाद में इसके नशे का आनन्द आने लगता है। जो लोग बार–बार इसका सेवन करते है उनको इसकी लत लग जाती है और इसका सेवन छोड नही पाते है धीरे–धीरे व्यक्ति इसके साथ अन्य नशीले पदार्थो का भी आदी हो जाते है और तम्बाकू का नियमित सेवन करना उनकी बाध्यता हो जाती है। बाद में व्यक्ति चाहकर भी इसके सेवन को बन्द नही कर पाते। सेवन बंद करते है तो उन्हें इतनी बेचैनी हो जाती है कि वे उनका फिर से सेवन शुरू कर देते हैं यदि कोई तम्बाकू को छोडना चाहे तो स्वयं की इच्छा शक्ति द्वारा छौड़ सकता है। मानसिक रूप से मजबूत व्यक्ति ही तम्बाकू की बुरी लत को छोड़नें में सफल हो सकता है।

ध्यान रखने योग्य–

1 सरकार द्वारा तम्बाकू सेवन से होने वाले दुष्प्रभावों से लोगों को जागरूक किया जा सकता है।

2. परिवार के द्वारा बच्चों को तम्बाकू के दुष्प्रभावों के प्रति सचेत किया जा सकता है।

3. स्कूल व कालेजों में विधार्थियों में तम्बाकू के दुष्परिणामों की जानकारी दी जा सकती है।

संदर्भ–

1. Use of tobacco started from AKBAR era 399113- Naidunia
2. तम्बाकू– भारत कोश, ज्ञान का हिन्दी महासागर
3. तम्बाकू– विकिपीडिया
4. answer. Gkplanet.in
5. www.Answers.com
6. www.biharboard.ac.in/pdf/ History-100-Marks-20171206.pdf.